

नवयुग का मत्स्यावतार

चेतना का तीव्र विस्तार: एक अदृश्य ईश्वरीय तरंग का
वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक विश्लेषण

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

जीवधारियों की जैविक सीमाओं का अतिक्रमण



कमण्डल

ब्रह्मा जी के आचमन के जल में एक छोटा कीड़ा

असाधारण विस्तार



असाधारण विस्तार



समुद्र

समूचे जल-थल क्षेत्र को घेर लेने वाला महामत्स्य

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के लिए है। आप सब को ज्ञान-जन्म तक

क्रान्तिधर्मी साधक करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगत्रयी **तालाब** तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)
कुछ ही क्षणों में कमण्डल से बड़ा होकर तालाब में समाहित

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन ने के बीच में पहुँचना ही और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे कान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदवृत्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

जीवधारी का पुरुषार्थ
अपनी क्षमता के अनुरूप थोड़ा कार्य

अदृश्य ईश्वरीय प्रेरणा
योजना और क्षमता मेरी ही कार्य करेगी

महामत्स्य /
परब्रह्म

असम्भव का सम्भव होना
सृष्टि की नई साज-सज्जा और
अव्यवस्था का सुव्यवस्थित होना

लघु /
तुच्छ

ईश्वरीय
संकल्प

महान् /
विशाल

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

तीव्र विस्तार
चेतना का स्वभाव है

जब किसी प्रयोजन के पीछे दैवी सत्ता की योजना काम करती है,
तो उसका द्रुतगामी विस्तार निश्चित है

चाँदा मुरु फरायन्ने वस्नीयय से ल
वननियारो १५५ को अन्दन्गी मात
काँ सात छात ज्ञान शरीरस प्रकार
जन-जन के बीच में पहुँचना ही च
आर सवन्न सवन्न कहियेगा, कि
स से वाहानया विन्न हावच
आस्वन्त, साहित्य शास्त्री उ
जन ज्ञान यहवैतल्ल
क्रान्ति भव वहल्लेग
वास्ता करें।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

एक बीज



मनुष्य ऋतुओं का परिवर्तन या
पुष्प-पल्लवों का सृजन अपने
बलबूते नहीं कर सकता।
यह “एकोऽहम् बहुस्याम” के ईश्वरीय
संकल्प का वैज्ञानिक प्रमाण है

वसन्त पंचमी १९१० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

एक वृक्ष और
हजारों बीज

३-४ पीढ़ियों
में सघन
वन्य प्रदेश

मानवीय क्षमता

- अत्यन्त सीमित
- अपना एक छोटा घर बनाने में भी असंख्य लोग असफल

ईश्वरीय क्षमता

- असीमित और ब्रह्माण्डीय
- आकाश में सूर्य, तारे टाँगना और निर्जीव धरातल को हलचलों से भरना

युग परिवर्तन

टूटे खण्डहरों की सफाई और भव्य भवनों का निर्माण एक साथ

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही बो ही जिन्दा जन-जन के बीच में बँधा ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के प्रयास करें रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्षि तपोन्नि श्रीराम र्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

कच्छपावतार

1



भारी-भरकम समुद्र-मन्थन
और चौदह रत्न

परशुराम

2



संसार भर का 'ब्रेन वाशिंग'
और विचार-क्रान्ति

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा - सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

राम

3



मुट्ठी भर वानर भालू द्वारा
लंका का पराभव

कृष्ण

4



५ पाण्डवों द्वारा अक्षौहिणी
सेना का निरस्त किया जाना

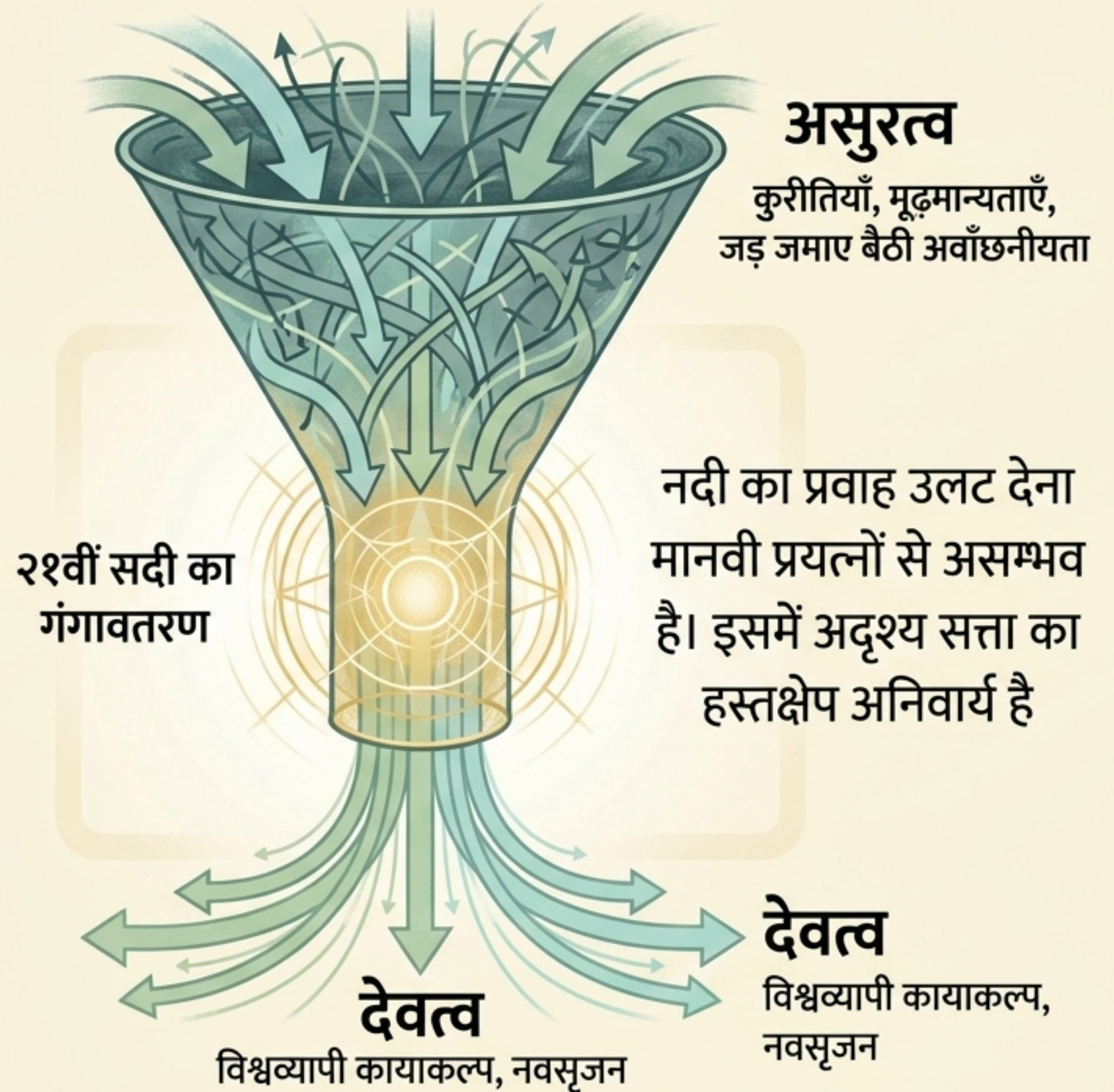


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञानों से कहियेगा कि
मेरे क्रान्ति धर्म साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
जन तक पहुँचाने (गायत्री परिवार के संस्थापक)

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ श्रीराम शाचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



अखण्ड ज्योति पत्रिका
८.५ लाख प्रतियाँ × ५ पाठक = १ करोड़ विचारशीलों का परिकर



युग साहित्य
३००० छोटी-बड़ी पुस्तकें, अनगिनत संस्करण,
अनेक भाषाओं में अनुवाद



विद्वानों और सम्पत्तिवानों के बिना,
सामान्य जनों द्वारा एक ही चेतना के
निर्देश पर यह सम्भव हुआ

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



शान्तिकुञ्ज

५०००+
प्रज्ञापीठों का
निर्माण

युगसन्धि
महापुरश्चरण

१० लाख
सृजन शिल्पी

नित्य कर्म
(१०००+ दैनिक पत्र,
निरन्तर भोजन
व्यवस्था)

सामान्य व्यक्ति की योजना से
यह विशाल तंत्र खड़ा होना
इतिहास की अनुपम घटना है

नव-सृजन की आधारशिला

दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन

खर्चीली शादियाँ

नशेबाजी

जाति-पाँति

पर्दा-प्रथा

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

सत्प्रवृत्ति सम्बर्धन

प्रौढ़ शिक्षा

वृक्षारोपण

नारी जागरण

यह दुहरा क्रिया-कलाप
अदृश्य ईश्वरीय ऊर्जा के बिना असम्भव है

Ripple of Divine Expansion



वर्तमान उपलब्धियाँ सिद्ध करती हैं कि यह मानवीय पुरुषार्थ नहीं, बल्कि पूज्य गुरुदेव का 'ज्ञान शरीर' है जो द्रुत गति से विस्तार पा रहा है

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा के रूप में ज्ञान-शरीर को भरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)